☛ रौशन पाठक

उम्र तमाम नाकाम रहा ।

हर दाव पै किस्मत आजमाता रहा,
हर बार हार कर पछताता रहा,
हारा हुआ जुआरी बदनाम रहा।
उम्र तमाम नाकाम रहा ।

अब–अब कह–कह उम्मीद बंधी थी,
किस्मत में जंजीर बंधी थी,
भारी मेरे हल्के मन पर,
हार का इल्जाम रहा।
उम्र तमाम नाकाम रहा ।

सफलता आ–आ कर छू कर निकल गई,
बंधी मुटठी से जैसे रेत निकल गई,
मिला क्या ? कुछ नहीं ,
पाने का बस नाम रहा।
उम्र तमाम नाकाम रहा ।

ख्वाबों में, अरमानों का, ऊँचा महल बना था
मैंनें अपना लक्ष्य जरा ऊँचा रखा था,
एक सिढी भी नसीब ना हुई,
ऐसा मेरा मुकाम रहा।
उम्र तमाम नाकाम रहा ।

अंधेपन का होने लगा आभास मुझे,
इतना मन में अंधकार भरा था,
उम्मीद भरे जीवन में मेरी,
सुबह को भी शाम रहा।
उम्र तमाम नाकाम रहा ।

सौ राह मिले हर राह में,
दौड़ा हर राह में कहीं पहुॅचने की चाह में,
था दौड़ भाग का जीवन,
पल भर भी ना विश्राम रहा ।
उम्र तमाम नाकाम रहा ।

शान में था सर ऊँचा उठाये,
जब तक सपनों में था खुद को डुबाये,
और हकीकत में सिर को झुकाये,
करता सदा सबको सलाम रहा।

☛ रौशन पाठक

उम्र तमाम नाकाम रहा ।

शराफत से थी पहचान मेरी,
ईमान और धर्म से था सम्मान बना,
भोला–भाला कहकर लूटा सबने,
यही मेरा ईनाम रहा।
उम्र तमाम नाकाम रहा ।

कहीं पड़ा हूँ ठोकर खाता,
जिसने लूटा वो ही पहचान ना पाता,
आवारा, अजनबी, लावारिश कहते,
ऐसा मेरा अंजाम रहा।
उम्र तमाम नाकाम रहा ।

दुख में मेरा एक ही था साथी,
मेरे लिये तो सबसे अच्छा था वो पासी,
गम में साथ मेरे उसी का झुठा जाम रहा।
उम्र तमाम नाकाम रहा ।

अंधेरे में जनमा रौशन,
अंधेरे में अवसान हुआ,
अंधो की दुनियॉ में देखो,
रौशन का क्या दाम रहा।
उम्र तमाम नाकाम रहा ।